शोध मंथन Vol. XVI No.4 Oct.- Dec. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.877 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.93

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के परिप्रेक्ष्य में डॉ. जाकिर हुसैन के शैक्षिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्राप्तिः 24.11.25
स्वीकृतः12.12.25

93

अखिलेश कुमार चौरसिया
शोध छात्र (शिक्षाशास्त्र विभाग)
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
ईमेलः *akc1049@gmail.com*

डॉ. मणि जोशी
एसोसिएट प्रोफेसर
बी.एड. श्री जय नारायण मिश्र
पी.जी. कॉलेज, लखनऊ
ईमेलः *manijoshi9@yahoo.in*

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारत के महान शिक्षाविद् और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन के मौलिक शैक्षिक विचारों का विश्लेषण करना है और यह पता लगाना है कि ये विचार नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)–2020 के मुख्य सिद्धांतों और प्रावधानों के साथ किस प्रकार तालमेल बिठाते हैं। डॉ. हुसैन ने शिक्षा को मात्र जीविकोपार्जन का माध्यम न मानकर सर्वांगीण मानव विकास, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय चेतना के निर्माण का एकमात्र साधन माना था।

इस अध्ययन में उनके बुनियादी शिक्षा (Basic Education) पर दिए गए बल, कार्य–केंद्रित शिक्षा (Work & Centric Education), नैतिक मूल्यों (Moral Values) और सांस्कृतिक विकास (Cultural Development) जैसे केंद्रीय विचारों की तुलना एनईपी–2020 के 5+3+3+4 संरचना, बहु–विषयक दृष्टिकोण (Multidisciplinary Approach), व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education) के एकीकरण, और मूल्यों पर आधारित शिक्षा (Value & Based Education) जैसे प्रमुख तत्वों से की गई है। विश्लेषण दर्शाता है कि एनईपी–2020 में कई ऐसे प्रावधान हैं जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से डॉ. जाकिर हुसैन के प्रगतिशील और भारतीय–केंद्रित शिक्षा दर्शन से प्रेरित हैं। यह शोध पत्र नीति–निर्माताओं और शिक्षाविदों के लिए एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि कैसे एक ऐतिहासिक भारतीय शैक्षिक दर्शन वर्तमान और भविष्य की शिक्षा प्रणाली के लिए प्रासंगिक बना हुआ है।

मुख्य शब्द

डॉ. जाकिर हुसैन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, कार्य–आधारित शिक्षा, मूल्य–आधारित शिक्षा, समग्र शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, शिक्षा का भारतीय दृष्टिकोण।

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा परंपरा सदैव मानवता, नैतिकता, श्रम, और समाज–सेवा पर आधारित रही है। आधुनिक भारत में डॉ. जाकिर हुसैन का नाम उन शिक्षाविदों में अग्रगण्य है जिन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं बल्कि चरित्र निर्माण और सामाजिक पुनर्निर्माण का साधन माना। उन्होंने महात्मा गांधी के 'नैतिक एवं कार्य आधारित शिक्षा'के विचारों को आगे बढ़ाया और शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाने पर बल दिया। डॉ. जाकिर हुसैन एक दूरदर्शी शिक्षाशास्त्री थे जिन्होंने भारतीय शिक्षा प्रणाली को औपनिवेशिक विरासत से मुक्त कर राष्ट्रीय आवश्यकताओं और सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का प्रयास किया। महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा की संकल्पना को व्यावहारिक और शैक्षिक आधार प्रदान करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने शिक्षा को सत्य की खोज, जिज्ञासा और आत्म–अनुभूति का माध्यम माना।

वहीं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भी भारतीय शिक्षा को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाते हुए अनुभवात्मक और कौशल–आधारित शिक्षा पर जोर देती है। इस नीति का उद्देश्य "समग्र, बहुआयामी और मूल्य–आधारित मानव निर्माण है। जो डॉ. जाकिर हुसैन के शैक्षिक दर्शन के समतुल्य माना जाता है। भारत सरकार द्वारा 2020 में लागू की गई नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 का उद्देश्य भी 21 वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप भारतीय शिक्षा प्रणाली में मौलिक परिवर्तन लाना है। यह नीति पहुँच (Access) समानता (Equity), गुणवत्ता (Quality), सामर्थ्य (Affordability) और जवाबदेही (|ccountability) के पाँच स्तंभों पर आधारित है। इस शोध पत्र का मुख्य प्रश्न यह है कि डॉ. हुसैन के शैक्षिक दर्शन के मूलभूत तत्व राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के प्रावधानों को समझने और उन्हें सफल बनाने में किस प्रकार सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

साहित्य समीक्षा

डॉ. जाकिर हुसैन के शैक्षिक योगदान पर व्यापक कार्य हुआ है। उन्हें अक्सर ''शिक्षाविद् राष्ट्रपति'' के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने जामिया मिलिया इस्लामिया जैसे संस्थानों को भारतीय संस्कृति और आत्मनिर्भरता के केंद्र के रूप में स्थापित किया। उनके विचार गांधीवादी दर्शन से गहरे रूप से प्रभावित थे, लेकिन उन्होंने जर्मनी में अपनी उच्च शिक्षा के दौरान प्राप्त प्रगतिशील शैक्षिक सिद्धांतों का भी समावेश किया।

एनईपी–2020 पर उपलब्ध साहित्य इसकी बहु–विषयक, लचीली और कौशल–आधारित शिक्षा की संरचना की प्रशंसा करता है। हालांकि, कुछ शोधों में यह इंगित किया गया है कि एनईपी–2020 की सफलता के लिए, इसे केवल एक नीतिगत दस्तावेज के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यापक शैक्षिक दर्शन के रूप में अपनाने की आवश्यकता है। डॉ. हुसैन के कार्य–केंद्रित और मूल्य–आधारित शिक्षा के विचार इस दर्शन को मजबूत आधार प्रदान कर सकते हैं। यह समीक्षा दर्शाती है कि डॉ. हुसैन के विचारों और एनईपी–2020 के बीच तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्यकता है, ताकि इन दोनों के बीच के गहरे संबंध को उजागर किया जा सके।

डॉ. जाकिर हुसैन के शैक्षिक विचारों के मुख्य तत्वः

डॉ. हुसैन का शिक्षा दर्शन निम्नलिखित केंद्रीय तत्वों पर आधारित हैः

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.93

- **शिक्षा का उद्देश्यः** सर्वांगीण विकासः डॉ. हुसैन के अनुसार, शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य जीविकोपार्जन नहीं है, बल्कि व्यक्ति का सर्वांगीण और संतुलित विकास है। यह विकास शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक सभी आयामों को समाहित करता है। यह शिक्षा बालक को स्वयं सोचने और देश का विकास करने में सक्षम बनाती है।
- **कार्य–केंद्रित शिक्षाः** उन्होंने उत्पादक कार्य को शिक्षा का माध्यम बनाने पर जोर दिया। यह विचार गांधीजी की 'बुनियादी शिक्षा' का मूल था, जिसे डॉ. हुसैन ने जाकिर हुसैन समिति (1937) के अध्यक्ष के रूप में शैक्षिक और व्यावहारिक रूप दिया। उनका मानना था कि काम (शिल्प) से केवल कौशल नहीं आता, बल्कि मानसिक एकाग्रता, सामाजिक जिम्मेदारी और उत्कृष्टता के मूल्य भी विकसित होते हैं।
- **मूल्य और नैतिक शिक्षाः** डॉ. हुसैन ने विज्ञान की शिक्षा को अनिवार्य मानते हुए भी उसमें धर्म तथा नैतिक मूल्यों को सम्मिलित करने पर बल दिया। उनका मानना था कि बौद्धिक ज्ञान सामाजिक और नैतिक आदर्शों से रहित होने पर निरर्थक है। शिक्षा का अंतिम लक्ष्य सेवा, परोपकारिता और आध्यात्मिक लक्ष्यों की ओर प्रेरित करना होना चाहिए।
- **स्वायत्तता और बाल–केंद्रित दृष्टिकोणः** उन्होंने उच्च शिक्षा में विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता की मांग की और प्राथमिक स्तर पर बाल–केंद्रित शिक्षा पर बल दिया। उनका मानना था कि बालक को ज्ञान की खोज करने की पूर्ण स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख बिंदुः एनईपी–2020 भारतीय शिक्षा के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें निम्नलिखित विशेषताएं प्रमुख हैं:

- **बहु–विषयक और लचीला पाठ्यक्रमः** एनईपी–2020 विषयों के बीच की कठोर सीमाओं को समाप्त कर कला, विज्ञान, वाणिज्य, खेल और व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण पर जोर देती है। यह छात्रों को अपनी रुचि के विषय चुनने में लचीलापन प्रदान करती है।
- **व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरणः** यह नीति कक्षा 6 से ही व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत करने का प्रस्ताव करती है। इसका लक्ष्य 2025 तक कम से कम 50: शिक्षार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना है।
- **मातृभाषा स्थानीय भाषा में शिक्षाः** एनईपी–2020 कक्षा 5 तक, और अधिमानतः कक्षा 8 और उससे आगे तक, शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा स्थानीय क्षेत्रीय भाषा के उपयोग पर बल देती है, जो सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करने में सहायक है।
- **मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान (Foundational Literacy and Numeracy) :–** नीति आधारभूत साक्षरता और गणनात्मक कौशल (FLN) पर विशेष ध्यान केंद्रित करती है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी छात्र कक्षा 3 तक पढ़ने, लिखने और बुनियादी अंकगणित में आवश्यक कौशल प्राप्त कर लें।

अध्ययन की पृष्ठभूमिः डॉ. जाकिर हुसैन (1897–1969) न केवल भारत के तीसरे राष्ट्रपति थे, बल्कि वे एक महान शिक्षाशास्त्री और सामाजिक विचारक भी थे। उन्होंने नैतिकता, श्रम, कला और जीवन–संबंधी अनुभवों को शिक्षा का अंग माना। उनकी शिक्षा–दृष्टि का विकास मुख्यतः

अलीगढ़ आंदोलन, नैतिक शिक्षा आंदोलन और नैतिक प्रयोगात्मक विद्यालय (Basic Education Movement) से हुआ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का स्वरूप भी शिक्षा को जीवन से जोड़ने की दिशा में एक बड़ा कदम है। अतः दोनों के विचारों की तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन से भारतीय शिक्षा की जड़ों को समझा जा सकता है।

शोध की आवश्यकताः आज के तकनीकी युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना रह गया है। नैतिकता, चरित्र, संवेदना और सृजनशीलता शिक्षा के केंद्र से दूर हो रही हैं। डॉ. जाकिर हुसैन के विचारों में निहित मानवीयता, श्रम, और समाज के प्रति जिम्मेदारी, वर्तमान शिक्षा के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। इसी कारण यह अध्ययन आवश्यक है कि हम यह समझें कि एनईपी–2020 में इन विचारों का किस हद तक समावेश हुआ है और किस दिशा में आगे सुधार संभव है।

शोध उद्देश्यः

1. डॉ. जाकिर हुसैन के प्रमुख शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के प्रमुख प्रावधानों का विश्लेषण करना।
3. दोनों विचारधाराओं के समानताओं एवं भिन्नताओं का निर्धारण करना।
4. एनईपी–2020 में डॉ. जाकिर हुसैन के शैक्षिक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता को रेखांकित करना।
5. समकालीन शिक्षा में इन विचारों के प्रयोग की संभावनाओं पर विचार करना।

समस्या का कथनः क्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 डॉ. जाकिर हुसैन के शैक्षिक दर्शन के अनुरूप है?' यह अध्ययन इसी मूल प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास है। कि आधुनिक शिक्षा नीति में उनकी मूल शिक्षात्मक अवधारणाओं (जैसे श्रम, नैतिकता, व्यावहारिकता और मानवता) का किस स्तर तक समावेश हुआ है।

अनुसंधान पद्धतिः यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि पर आधारित है। इसमें द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकों, शोध–पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, एनईपी–2020 के आधिकारिक दस्तावेज, और डॉ. जाकिर हुसैन के व्याख्यानों एवं लेखों का उपयोग किया गया है।

डॉ. जाकिर हुसैन के शैक्षिक विचारों का एनईपी–2020 के साथ विश्लेषणात्मक संबंधः

डॉ. जाकिर हुसैन के दर्शन और एनईपी–2020 के बीच कई महत्वपूर्ण समानताएं हैं, जो नीति की वैचारिक नींव को दर्शाती हैं:

1. कार्य–केंद्रित शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरणः

डॉ. हुसैन का विचार	एनईपी–2020 का प्रावधान	विश्लेषण
उत्पादक शिल्प कार्य–केंद्रित शिक्षाः कार्य को शिक्षा का माध्यम बनाना, जिससे सामाजिक जिम्मेदारी और उत्कृष्टता आए।	व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरणः कक्षा 6 से ही व्यावसायिक ज्ञान को मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ना, ताकि छात्र आत्मनिर्भर बन सकें।	एनईपी–2020 का व्यावसायिक शिक्षा पर जोर डॉ. हुसैन के कार्य–केंद्रित शिक्षा के सिद्धांत का आधुनिक और व्यावहारिक रूप है। दोनों ही उत्पादकता और आत्मनिर्भरता को शिक्षा का अपरिहार्य अंग मानते हैं, जो केवल सैद्धांतिक ज्ञान से हटकर कौशल–आधारित विकास पर बल देता है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.93

2. सर्वांगीण विकास और बहु–विषयक शिक्षाः

डॉ. हुसैन का विचार	एनईपी–2020 का प्रावधान	विश्लेषण
सर्वांगीण मानव विकासः शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास पर समान बल।	बहु–विषयक दृष्टिकोणः विषयों (कला, विज्ञान, खेल) के बीच कठोर अलगाव को समाप्त कर समग्र विकास को बढ़ावा देना।	डॉ. हुसैन के संतुलित विकास का लक्ष्य एनईपी–2020 की बहु–विषयक और लचीली पाठ्यक्रम संरचना के माध्यम से प्राप्त किया जा रहा है, जो बौद्धिक संकीर्णता को तोड़कर रचनात्मकता और तार्किक सोच को प्रोत्साहित करता है।

3. मूल्य–आधारित शिक्षा और नैतिक विकासः

डॉ. हुसैन का विचार	एनईपी–2020 का प्रावधान	विश्लेषण
नैतिक मूल्यों का समावेशनः शिक्षा में धर्म, नैतिकता, सेवा और परोपकारिता के मूल्यों को शामिल करना।	मूल्य–आधारित शिक्षाः पाठ्यक्रम में नैतिक तर्क, संवैधानिक मूल्य, और भारतीय ज्ञान प्रणालियों को शामिल करना।	दोनों ही दृष्टिकोण इस बात पर सहमत हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानी नागरिक नहीं, बल्कि नैतिक और जिम्मेदार नागरिक तैयार करना है। डॉ. हुसैन का दर्शन एनईपी–2020 को एक गहन नैतिक दिशा प्रदान करता है।

4. बाल–केंद्रित और स्वतंत्रता–आधारित अधिगमः

डॉ. हुसैन का विचार	एनईपी–2020 का प्रावधान	विश्लेषण
बाल–केंद्रित शिक्षाः बालक को ज्ञान की खोज करने और अपनी जिज्ञासा पूरी करने की स्वतंत्रता देना।	लचीलापन और आलोचनात्मक सोचः छात्रों को विषय चुनने की स्वतंत्रता, और रटने के बजाय आलोचनात्मक चिंतन और समस्या–समाधान पर बल देना।	एनईपी–2020 का लचीला पाठ्यक्रम और अधिगम का मॉडल सीधे तौर पर डॉ. हुसैन के बालक की रुचि और स्वतंत्रता को महत्व देने के विचार को मान्यता देता है।

तुलनात्मक अध्ययनः

पहलू	डॉ. जाकिर हुसैन के विचार	राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020
मूल्य शिक्षा	शिक्षा का उद्देश्य नैतिकता और मानवता	नीति में नैतिक शिक्षा और जीवन कौशल पर बल
कार्य शिक्षा	श्रम और शिक्षा का समन्वय	व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास पर ध्यान
समग्र विकास	बौद्धिक, शारीरिक, भावनात्मक विकास	समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा की संरचना
भाषा	मातृभाषा में शिक्षा का समर्थन	प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा
समानता	शिक्षा सबके लिए	नीति में समावेशन और समान अवसर

आलोचनात्मक विश्लेषणः

- **समानता का प्रश्नः** डॉ. हुसैन ने शिक्षा को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने पर बल दिया। एनईपी–2020 भी यही कहती है, परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी चुनौती बनी हुई है।
- **कार्य शिक्षा बनाम कौशल शिक्षाः** डॉ. हुसैन का दृष्टिकोण श्रम आधारित था, जबकि एनईपी–2020 कौशल और तकनीकी शिक्षा पर केंद्रित है।
- **सांस्कृतिक चेतनाः** डॉ. हुसैन ने भारतीय संस्कृति को शिक्षा का आधार माना, एनईपी–2020 भी भारतीय ज्ञान परंपरा को महत्व देती है।
- **प्रौद्योगिकी का प्रयोगः** डॉ. हुसैन के समय में यह संभव नहीं था, पर आज एनईपी–2020 डिजिटल शिक्षा को प्राथमिकता देती है।

डॉ. जाकिर हुसैन के विचारों की आधुनिक प्रासंगिकताः

- आज की शिक्षा जब तकनीकी और प्रतिस्पर्धी होती जा रही है, तब मानवीयता और नैतिकता को जीवित रखना आवश्यक है।
- एनईपी–2020 के अंतर्गत "जीवन–कौशल" "सामाजिक–भावनात्मक शिक्षा" और "मूल्य आधारित नागरिकता" डॉ. हुसैन के विचारों का आधुनिक रूप हैं।
- उन्होंने जिस "शिक्षा और समाज" के समन्वय की बात की थी, आज वही दृष्टि स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा तक नीति में परिलक्षित है।

कार्यान्वयन की चुनौती और हुसैन का मार्गदर्शनः

एनईपी–2020 की सफलता केवल इसके प्रावधानों की उत्कृष्टता पर नहीं, बल्कि इसके पीछे की दार्शनिक भावना को अपनाने पर निर्भर करती है। डॉ. हुसैन के विचार कार्यान्वयन में आने वाली दो प्रमुख चुनौतियों के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैंः

1.शिक्षक प्रशिक्षणः हुसैन का मानना था कि शिक्षक ही परिवर्तन के मुख्य वाहक हैं। एनईपी को चाहिए कि वह शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम निष्पादक के रूप में नहीं, बल्कि चिंतनशील अभ्यासी के रूप में प्रशिक्षित करे, जो शिल्प को केवल एक श्रम नहीं, बल्कि एक शैक्षणिक उपकरण के रूप में उपयोग कर सकें।

2.गुणवत्ता और उत्कृष्टताः बुनियादी शिक्षा की आलोचना अक्सर गुणवत्ता की कमी को लेकर हुई थी। डॉ. हुसैन के 'उत्कृष्टता' पर जोर देने का अर्थ है कि एनईपी के तहत व्यावसायिक शिक्षा और अनुभवात्मक अधिगम को लागू करते समय, उत्पाद की गुणवत्ता (Quality of Output) और शैक्षणिक कठोरता (Academic Rigour) से समझौता नहीं किया जाना चाहिए।

संक्षेप में, डॉ. जाकिर हुसैन का शिक्षा दर्शन एनईपी–2020 को केवल एक प्रशासनिक दस्तावेज नहीं, बल्कि एक मानवीय, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय मिशन बनाने के लिए वैचारिक आधार, दृढ़ संकल्प और दिशा प्रदान करता है। उनके विचार इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारत की शैक्षिक प्रगति उसकी अपनी जड़ों, श्रम के सम्मान और अटूट नैतिक मूल्यों पर आधारित होनी चाहिए।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.93

निष्कर्ष और सुझावः

डॉ. जाकिर हुसैन का शिक्षा दर्शन भारतीय शिक्षा के लिए एक कालातीत मार्गदर्शक सिद्धांत है। उनके कार्य–केंद्रित, मूल्य–आधारित और सर्वांगीण विकास के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि उनके समय में थे।

विश्लेषण का निष्कर्ष यह है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारतीय शिक्षा को फिर से डॉ. हुसैन और महात्मा गांधी जैसे दूरदर्शी शिक्षाविदों के मूल सिद्धांतों की ओर ले जाने का एक सचेत प्रयास है। यह नीति भारतीय–केंद्रित शिक्षा प्रणाली की उस आवश्यकता को पूरा करती है जिसे डॉ. हुसैन ने सबसे पहले पहचाना था। एनईपी–2020 का व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण, बहु–विषयक दृष्टिकोण और नैतिक मूल्यों पर जोर, डॉ. हुसैन के दर्शन की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है।

सुझावः एनईपी–2020 की पूर्ण सफलता के लिए, निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं जो डॉ. जाकिर हुसैन के विचारों को और मजबूत करेंगेः

1. **उत्पादक कार्य की गुणवत्ताः** व्यावसायिक शिक्षा को केवल 'कौशल' तक सीमित न रखकर, डॉ. हुसैन के जोर के अनुसार, उत्कृष्टता और मानसिक गतिविधियों से जोड़ा जाना चाहिए। शिक्षकों को शिल्प को केवल श्रम के रूप में नहीं, बल्कि एक शैक्षणिक साधन के रूप में देखने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
2. **मूल्य शिक्षा का कार्यान्वयनः** नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में एक अतिरिक्त विषय के रूप में शामिल करने के बजाय, उन्हें शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के हर पहलू में एकीकृत किया जाना चाहिए, जैसा कि डॉ. हुसैन ने 'सेवा' और 'आध्यात्मिक लक्ष्यों' के माध्यम से सुझाया था।
3. **शिक्षकों की स्वायत्तताः** डॉ. हुसैन की तरह, शिक्षकों को पाठ्यक्रम को रचनात्मक रूप से लागू करने के लिए पर्याप्त व्यावसायिक स्वायत्तता और उच्च गुणवत्ता वाला शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

संक्षिप्तरूप में, डॉ. जाकिर हुसैन का शिक्षा दर्शन एनईपी–2020 को केवल एक प्रशासनिक दस्तावेज नहीं, बल्कि एक मानवीय और राष्ट्रीय मिशन बनाने के लिए वैचारिक शक्ति और दिशा प्रदान करता है।

संदर्भ

1. Altekar, A.S.(2009). Education in Ancient India, Isha Books, New Delhi,
2. Darjan.(2023). Reason, Religion, & Nation: Syed Ahmad Khan.
3. Grover, Virender.(1993). Political thinker of Modern India-17:AbulKalam Azad.
4. Gupta, S.P.& Gupta, Alka. (2023). History of Indian Education, Sharada Publication, Prayagraj.
5. Gupta, S.P.& Gupta, Alka.(2023). National Educational Policy -2020,Sharada Publication, Prayagraj.
6. Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education.

7. Saxena, Manoj K. & G.S, Anu(2019). National Educational Policy on Higher Education,Prahat Publication,New Delhi, 1st Edition.
8. हुसैन, जाकिर (1959). *The Philosophy of Basic Education*.
9. Zakir Hussain Committee Report (1937-38) on Basic National Education (Nai Talim).
10. भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020). शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
11. अरोड़ा, पंकज., शर्मा,उषा (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, रचनात्मक सुधारों की ओर, शिप्रा प्रकाशन, प्रतापगंज, नई दिल्ली,प्रथम संस्करण।
12. गांधी, एम. के. (1947). नैतिक शिक्षा पर विचार. नवल प्रकाशन।
13. पांडेय, राम सकल (2020) विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, डॉ. जाकिर हुसैन, श्री विनोद पुस्तक मंदिर प्रकाशन, आगरा ।
14. प्रकाश, सुमंगल (1972) डॉ जाकिर हुसैन (जीवनी), नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली।
15. आर. पी. (2018). भारतीय शिक्षाविदों के विचार. आगराः विनोद पब्लिकेशन।
16. शर्मा, आर. एन. (2005). भारतीय शिक्षाशास्त्र का इतिहास. दिल्लीः सुरज पब्लिकेशन।
17. शर्मा, शिवशंकर (1955), शिक्षा (अभिभाषण), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
18. उपाध्याय, हरिभाऊ व जैन, यशपाल, (1969), गांधी वैष्णवजन, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली।
19. वर्मा, ताराचंद (1969), डॉ जाकिर के व्यक्तित्व व विचार, चिन्मय प्रकाशन, जयपुर, राजस्थान।